श्री
कुलजम सरूप

निजनाम श्री जी साहिबजी, अनादि अछरातीत ।
सो तो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहीत ।।

❖ छोटा कयामतनामा ❖

मोमिन दुनी का बेवरा

जो नूर पार अर्स अजीम, ए जो बेवरा कयामत[१] का ।
मोमिन दुनी की तफावत, ए फना ओ बीच बका ।।१।।

जब लाहूत से रूहें उतरीं, कह्या अलस्तो बे रब कुंम[२] ।
नासूत जिमीमें जाए के, जिन मुझे भूलो तुम ।।२।।

तब रूहों वले[३] कह्या, हम भूलें नहीं क्योंए कर ।
तुम साहेद[४] किए रूहें फरिस्ते, पल रेहे न सकें तुम बिगर ।।३।।

तुम खावंद हमारे सिर पर, अर्स अजीम बका वतन ।
हम क्यों भूलें सुख कायम, तुमारे कदमों हमारे तन ।।४।।

हकें कौल किया भेजों मासूक, तिन के साथ फुरमान ।
भेज इलम लेऊं जगाए, देसी रूह अल्ला सब पेहेचान ।।५।।

१. अंतिम दिन । २. क्या मैं नहीं हूं खावंद तुम्हारा । ३. तेहेकीक तुम हमारे खाविंद हो ।
४. साक्षी का ।

हाथ रसूल के फुरमान, रूह अल्ला साथ इलम ।
हादी करावें हजूर बंदगी, खोले पट हक के हुकम ।।६।।

तीनों सूरत महंमद की, तिन जुदी जुदी करी पुकार ।
रूहें फरिस्ते लेवें सब साहेदियां, जो लिख भेजी परवरदिगार ।।७।।

बसरी मलकी और हकी, ए तीनों के जुदे खिताब ।
एक फुरमान ल्याई दूसरी कुंजी, तीसरी खोले किताब ।।८।।

लिख भेजी रमूजें इसारतें, दो गिरो तीन सूरत पर ।
दूसरा बका की न खोल सके, ए वाहेदत गुझ खबर ।।९।।

हजरत आए आया सब कोई, और ले चलेगें सब ।
ए लिखियां जो इसारतें, फुरमाया फिरे न कब ॥१०॥

चले लैलत कदर से, तकरार जो अव्वल ।
सो भेले दुनी के क्यों चले, जो उमत अर्स असल ॥११॥

गिरो बचाई साहेब ने, तले कोहतूर[1] हूद[2] तोफान ।
बेर दूजी किस्ती पर, चढ़ाए उबारी सुभान ॥१२॥

अब आई बेर तीसरी, तिनका सुनो विचार ।
पेहेचान बिना गिरो क्या करे, या यार या सिरदार ॥१३॥

या अर्स आपकी पेहेचान, या हक हादी रूहें निसबत ।
गिरो खासी उतरी अर्स से, और दुनी पैदा जुलमत ॥१४॥

दिल मोमिन अर्स कह्या, सैतान दुनी दिल पर ।
क्यों गिरो दुनी भेली चले, भई तफावत[3] यों कर ॥१५॥

ना पेहेचान ना निसबत, दुनी गिरो असल दुस्मन ।
एक हक न छोड़ें उमत, दुनी दुनियां बीच वतन ॥१६॥

निसबत इन तफावत, ए भेले चलें क्यों कर ।
दुनी जिमी गिरो आसमानी, दुनी के पांउं गिरो के पर ॥१७॥

१. गोवरधन । २. नंद । ३. फर्क ।

एक ईमान दूजा इस्क, ए पर मोमिन बाजू दोए ।
पट खोल पोहोंचावे लदुन्नी, इन तीनों में दुनी पे न कोए ॥१८॥

ए दुनी चले चाल वजूद की, उमत चले रूह चाल ।
लिख्या एता फरक कुरान में, दुनी उमत इन मिसाल ॥१९॥

कह्या दुनियां दिल मजाजी, सो उलंघे ना जुलमत ।
दिल अर्स हकीकी मोमिन, ए कहे कुरान तफावत ॥२०॥

इनमें रूह होए जो अर्स की, सो क्यों रहे दुनी सों मिल ।
कौल फैल हाल तीनों जुदे, यामें होए ना चल विचल ॥२१॥

जो मोमिन देखें राह दुनी की, सो रूह नहीं अर्स तन ।
दुनियां घर जुलमत से, मोमिन अर्स वतन ॥२२॥

पेहेले चल्या सैयद अकेला, तब तो थी सरीयत ।
अब अकेले क्यों छोड़िए, गिरो पोहोंची दिन मारफत ॥२३॥

पेहेले एक जहूद बुजरक, तिन पीठ न छोड़ी महंमद ।
यार असहाब न चल सके, ताकी दे मसनवी साहेद ॥२४॥

जहूद कहिए क्यों तिन को, जो करे ऐसे फैल ।
आगे हुआ सबन के, कदम छोड़ी ना महंमद गैल ॥२५॥

तिन खोली रूह नजर, जाए हकें बखसी बातन ।
इन राह सोई चलसी, जो हक अर्स दिल मोमिन ॥२६॥

दिल मजाजी जो कहे, ताको अर्स दिल कबूं न होए ।
सो आए न सके वाहेदत में, जिन दिल अबलीस कह्या सोए ॥२७॥

रसूलें राह बताई मेयराज में, अर्स लेसी सोई मोमिन ।
देखाई चढ़ उतर, जो हकें खिलवत कहे सुकन ॥२८॥

मजकूर करी महंमद ने, हक हादी बीच रूहन ।
हकें कह्या उतरते रूहों को, सो सब मुसाफ करे रोसन ॥२९॥

जो पोहोंच्या इन खिलवतें, दिल हकीकी इन राह ।
इत दिल मजाजी आए न सके, जित अबलीस दिलों पातसाह ॥३०॥

भूले करे जाहेरियों सिफत, सुध न परी बातन ।
मारफत सूरज उगे बिना, क्यों देखें बका अर्स तन ॥३१॥

तो दें बड़ाई जाहेर परस्तों को, जो समझे नहीं हकीकत ।
हक इलम आए बिना, तो क्यों समझे मारफत ॥३२॥

सरीयत करे फरज बंदगी, करे जाहेर मजाजी दिल ।
बका तरफ न पावे अर्स की, ए फानी बीच अंधेर असल ॥३३॥

दिल हकीकी जो मोमिन, सो लें माएने बातन ।
हक इलम इस्क हजूरी, रूहें चलें बका हक दिन ॥३४॥

फेर आए रसूल स्याम मिल, सोई फेर आये यार ।
देख निसबत पांचों दुनीमें, क्यों छोड़ें असल अर्स प्यार ॥३५॥

कहे महंमद पेहेले जब मैं चलों, यार आए मिलें खिन मांहें ।
ए वाहेदत की साहेदी, जाग्या जुदा रेहेवे नाहें ॥३६॥

मैं अव्वल जो चलों, साथ आए मिलें सब कोए ।
तो सिफत दुनियां मिने, खासी गिरो की होए ॥३७॥

इत मैं चलो जो अव्वल, कर यारों सों सहूर ।
तो खूबी होए तेहेकीक, नूर पर नूर सिर नूर ॥३८॥

खूबी खुसाली अधिक, और ज्यादा सोभा संसार ।
ले प्याला रूह जगाए के, ल्यो इस्क चलो हादी लार ॥३९॥

पोहोंचे नहीं अंग दिल के, ताथें रूह अंग लीजे जगाए ।
तो लों आपा ना मरे, जोलों खुदी न देवे उड़ाए ॥४०॥

जब उठें अंग रूह के, सो तूं जागी जान ।
आई अर्स अंग लज्जत, तिन पूरी भई पेहेचान ॥४१॥

जो अंग होवे अर्स की, उपजत नहीं अंग आहे ।
बारे हजार रूहन में, सो काहे को आप गिनाए ॥४२॥

करवट लेते सूते नींदमें, नाला[1] मारत जे ।
याद बिगर किए अंग आवहीं, स्वाद आसिक मासूक के ॥४३॥

जो होए आवे मोमिन रूह से, सो कबूं ना और सों होए ।
इत चली जो रूह जगाए के, सो सोभा लेवे ठौर दोए ॥४४॥

देख बिछोहा हादी का, पीछा साबित राखे पिंड ।
धिक धिक पड़ो तिन अकलें, सो नहीं वतनी अखंड ॥४५॥

ए जाहेर देखावें दोस्ती, जाए रूह न अंदर पेहेचान ।
ए मोमिन रूहें जानहीं, जाको अर्स दिल कह्यो सुभान ॥४६॥

रूहें दम बिछोहा न सहें, जो होए बका की असल ।
रूह हादी की चलते, अरवा आगूं हीं जाए चल ॥४७॥

दिल हकीकी रहे ना सकें, जो आया लदुन्नी दरम्यान ।
दिल मजाजी क्या करे, हुआ फरक जिमी आसमान ॥४८॥

कोई छोड़े ना अपनी असल, पोहोंचे सिफली[2] का मलकूत ।
जबरूती जबरूत में, रूहें लाहूती लाहूत ॥४९॥

बेवरा लिख्या मुसाफ में, लिखे जुदे जुदे बयान ।
दिल मजाजी क्यों समझे, जाको मुरदार कह्या फुरकान ॥५०॥

ए उपले पानी उजूसे, हुआ न कोई पाक ।
ए पानी न पोहोंचे दिल को, क्या होए ऊपर धोए खाक ॥५१॥

किताबों सबों यों कह्या, अर्सें पोहोंचे रूह पाक ।
दिल मजाजी इन जिमी के, मिल जाए खाक में खाक ॥५२॥

खाक कछू न पावहीं, रूह तो अपने बीच असल ।
कोई देखे सहूर करके, तो पोहोंचे हादी कदमो नसल ॥५३॥

१. आह । २. मायावी जीव ।

गुम हुई जिनों की अकलें, होए नजीक न तिनों हक ।
जान बूझ न छोड़े इन जिमी, तिन से रेहेनी न होए बेसक ॥५४॥

कदी केहेनी कहे मुख से, बिन रेहेनी न होवे काम ।
रेहेनी रूह पोहोंचावहीं, केहेनी लग रहे चाम ॥५५॥

केहेनी सुननी गई रात में, आया रेहेनी का दिन ।
बिन रेहेनी केहेनी कछुए नहीं, होए जाहेर बका अर्स तन ॥५६॥

केहेनी करनी चलनी, ए होंए जुदियां तीन ।
जुदा क्या जाने दुनी कुफर की, और ए तो इलम आकीन ॥५७॥

अर्स सब जाहेर हुआ, नूर तजल्ला हक ।
रूहअल्ला महंमद मेंहेंदी ने, उड़ाए दई सब सक ॥५८॥

सूर ऊग्या मारफत का, महंमद मेंहेंदी दिल ।
नूर अंधेर जुदे हुए, जो रहे थे रात के मिल ॥५९॥

कुफर और ईमान की, सुध न थी बीच रात ।
अब सुध परी सबन को, जाहेर हुई हक जात ॥६०॥

ना सुध मोमिन मुसलिम, ना सुध काफर मुनाफक ।
सो सुध हुई सबन को, किया बेवरा इलम हक ॥६१॥

हक इलम मारफत की, जाहेर किया नबी दिल नूर ।
कुफर काढ़ ईमान दिया, ऊग्या दिल मोमिन अर्सों सूर ॥६२॥

खोली इलमें सब किताबें, या कतेब या वेद ।
सब खोले मगज मुसाफ के, मांहें छिपे हुते जो भेद ॥६३॥

जेता कोई पैगंमर, सो सब जहूदों मांहें ।
इसलाम मोमिन सब याही में, कोई जाहेरियों में नाहें ॥६४॥

जाकी करे मुसाफ सिफतें, औलिए अंबिए पैगंमर ।
सो हुए सब जहूदों मिनें, जो देखे बातून सहूर कर ॥६५॥

जिने लिए माएने बातून, हुआ पैगंमर सोए ।
उमत औलिए अंबिए, बिन बातून न हुआ एक कोए ॥६६॥

जाहेरी बड़े जानें आपको, और समझें नहीं हकीकत वतन ।
हक इलम आया नहीं, तोलों होए नहीं रोसन ॥६७॥

कह्या जाहेर मांहें दुनियां, और बातून मांहें हक ।
ए वेद कतेब पुकारहीं, हक इलम कहे बेसक ॥६८॥

ए नूर जाहेर तो हुआ, जब कुराने खोली हकीकत ।
रात मेट के दिन किया, सो दिल महंमद सूर मारफत ॥६९॥

कौल किया हकें रूहों सों, बीच बका वतन ।
सो साइत आए मिली, जाहेर हुआ अर्स तन ॥७०॥

एक खुदी थी दुनी में, दूजी सुभे सक ।
करते फैल तरफ हवा के, पीठ दिए तरफ हक ॥७१॥

सो खुदी काढी जड़ मूल से, हुए जाहेर हक इलम ।
सक सुभे कछू ना रही, हुई सब में एक रसम ॥७२॥

जुदी जुदी जातें कहावतीं, फैल करते जुदे नाम धर ।
सो रात मेट के दिन किया, हुई जाहेर सबों फजर ॥७३॥

जिनों खुली नजर रूह की, सोई पोहोंचे अर्स हक ।
जिनों छूटी न नजर जाहेरी, सो पड़े दुनी बीच सक ॥७४॥

जिनों खुली हकीकत मारफत, सो सहे ना बिछोहा खिन ।
और हक इलम खोल्या आखिरी, ए बीच असल अर्स तन ॥७५॥

जो जाग उठ बैठा हुआ, जगाया हक इलम ।
सो हादी बिना पल एक ना रहे, छोड़ न सके कदम ॥७६॥

सब साहेदी दई जो हदीसों, और अल्ला कलाम ।
सो साहेदी ले पीछा रहे, तिन सिर रसूल न स्याम ॥७७॥

जिनों लदुन्नी पोहोंचिया, लिया बका अर्स भेद ।
सो क्यों गिरो सों जुदा पड़े, जाए परे कलेजे छेद ॥७८॥

जाए खुली हकीकत मारफत, पाई अर्स पेहेचान ।
सो क्यों सहे बका बिछोहा, जिनों नींद उड़ी निदान ॥७९॥

ए पोहोंच्या मता सब रूहों को, जब पोहोंचाया इलम हक ।
इत सक जरा ना रही, पोहोंच्या हक बका मुतलक ॥८०॥

जाको हक इलम पोहोंचिया, तिन हुआ सब दीदार ।
अंतर कछुए ना रह्या, वह पोहोंच्या नूर के पार ॥८१॥

जाको हक इलम आया नहीं, ताए पट रह्या अंतराए ।
हक नजीक थे सेहेरग से, तहां से दूर ले गए उठाए ॥८२॥

रूह ठौर है रूह के, ए जो लेती इत दम ।
सो गया असल जुलमतें, जिनों सुध परी ना हक कदम ॥८३॥

लिया लदुन्नी जिनने, सो क्यों सोवे कबर मांहें ।
जिने मूल सरूप देख्या अपना, उठ जागे सोवे नाहें ॥८४॥

वाको तो फजर हुई, हुआ बका सूरज दीदार ।
मिल्या कौल अव्वल का, जो किया था परवरदिगार ॥८५॥

जो उठी कयामत को, सो क्यों सोवे ऊगे दिन ।
आया असल तन में, बीच बका वतन ॥८६॥

जो कदी वह आगे चली, जिमी बैठी वह जिमी मांहें ।
पांचों पोहोंचे पांचों में, रूह अपनी असल छोड़े नाहें ॥८७॥

यों इलम समझावते, जो कोई ना समझत ।
तिन मजाजी दिल पर, जिन करो नसीहत ॥८८॥

काफर मुसलिम मोमिन, जो ए जुदे न होते तीन ।
तो अर्स तन और जिमी के, क्यों पाइए कुफर आकीन ॥८९॥

अर्स बका तन मोमिन, दुनियां फना जिमी तन ।
ताकी केहेनी रेहेनी क्यों होवे, क्यों होए एक चलन ॥९०॥

जो हक अर्स दिल मोमिन, मिल के करो सहूर ।
कही जिमी तले की दुनियां, रूहें नूर पार तजल्ला नूर ॥९१॥

मोमिन और दुनी के, चाहिए सब विध जुदागी ।
दुनियां पैदा जुलमत से, रूहें उतरी अर्स अजीम की ॥९२॥

ए सब बातें याद राखियो, फल बखत आखिरत ।
चलते फरक जो ना होवे, तो रूहों की क्यों करे हक सिफत ॥९३॥

मर मर सब कोई जात हैं, चाहिए मोमिनों मौत फरक ।
दुनियां बीच गफलत के, मोमिन जागें दिल अर्स हक ॥९४॥

जो रूह होसी मोमिन, चल्या चाहिए सावचेत ।
कह्या काफर स्याह मुंह आखिर, मुख मोमिन नूर सुपेत ॥९५॥

मेला मजाजी दिलों का, ए चले बांधी जात कतार ।
ए अर्स दिल हकीकी जीवते, क्यों चलें भांत मुरदार ॥९६॥

बीच फना जीवों के, क्यों रहें बका अर्स तन ।
पल इनमें रेहे ना सकें, जिन सिर बका वतन ॥९७॥

ए जो दुनियां दिल मजाजी, या उनके सिरदार ।
ना पोहोंचे फना बका मिने, ए हक कौल परवरदिगार ॥९८॥

मोमिन उतरे नूर बिलंद से, ए दुनी पैदा जुलमत ।
सांच झूठ क्यों मिल सके, क्यों रास आवे सोहोबत ॥९९॥

सांचे सांचा मिल चले, मिले झूठा झूठों मांहें ।
जो जैसा तैसी सोहोबत, इनमें धोखा नाहें ॥१००॥

अर्स दिल मोमिन कह्या, दुनी दिल पर अबलीस ।
ए सैतान दोस्त न किसी का, जो काट देवे कोई सीस ॥१०१॥

लाहूत बका फना नासूत, ए तौल देखो दोए ।
चिरकीन[1] जिमी से निकस के, क्यों न लीजे बका खुसबोए ॥१०२॥
जान बूझके भूलिए, इलम पाए बेसक ।
देखो दिल विचार के, क्यों राजी करोगे हक ॥१०३॥
जीवते मारिए आपको, सब्द पुकारत हक ।
जो जीवते न मरेंगे मोमिन, तो क्या मरेंगे मुनाफक[2] ॥१०४॥
फुरमाए कलाम सब रूहों को, ए मोमिन करें सहूर ।
इन अंधेरी से निकस के, क्यों न जैए पार नूर ॥१०५॥
हक हुकम हादी चलावते, क्यों न लीजे अर्स राह ।
मूल सरूप ले दिल में, उड़ाए दीजे अरवाह ॥१०६॥
चलना सबों सिर हक है, ए जान्या सबों तेहेकीक ।
पर आप बस कोई न चल्या, चले एक दूजे की लीक[3] ॥१०७॥
जो कोई इत जागिया, सो क्यों चले परवस ।
सब सावचेत सुरत बांध के, बीच उठिए अपने अर्स ॥१०८॥
जो जागी इत होएसी, तिनका एही निसान ।
मूल सरूप ले सुरत में, पट खोलिए कर पेहेचान ॥१०९॥
भला कहे दुनियां मिने, न भूलिए अपने तन ।
हक हादी रूहें बीच खिलवत, उठिए बीच बका वतन ॥११०॥
जो मसलहत[4] कर चलिए, अर्स रूहें मिल कर ।
अपनी जुदाई दुनी से, सो क्यों होए इन बिगर ॥१११॥
अपनी जुदाई दुनी से, किया चाहिए जहूर ।
दोऊ एक राह क्यों चलें, वह अंधेरी एह नूर ॥११२॥
महामत कहे सुनो मोमिनों, मेहेर हक की आपन पर ।
सब अंगों देखो तुम, तब खुले रूह की नजर ॥११३॥

॥प्रकरण॥१॥चौपाई॥११३॥

१. गंदी । २. नास्तिक । ३. रास्ता । ४. सलाह (परामर्श) करके ।

बाब पैगंमरों का

जेते पैगंमर भए, जिनों पोहोंचाया हक पैगाम ।
पाई जबराईल से बुजरकी, जो पोहोंच्या नूर मुकाम ।।१।।

हकीकत कुरान की, सो पोहोंची ठौर नूर ।
आगे हक के दिल की, सो मारफत में मजकूर ।।२।।

हुआ मेयराज महंमद पर, तिन में बका सब बात ।
महंमद पोहोंच्या हजूर, तहां देखी हक जात ।।३।।

देखे मोती[१] पूर नूर से, कह्या मुंह पर कुलफ[२] तिन ।
इन कुलफ को खोलेगा, तेरा दिल रोसन ।।४।।

गुनाह तेरी उमत का, कुलफ मुंह मोतियन ।
देख दाहिने हाथ पर, जो हक मुख कहे सुकन ।।५।।

किस वास्ते फिकर करे, देख दाहिने हाथ पर ।
कुलफ मोतियों के मुंह पर, सब नूर आया महंमद नजर ।।६।।

हकें कह्या गुनाह किया उमतें, कह्या कुलफ ऊपर दिल ।
ए जो दई फरामोसी खेल में, जो उतरते मांग्या रूहों मिल ।।७।।

कहूं पेहेले जंगल जरी जवेर, रोसन नूर झलकत ।
जोए[३] किनारें दरखत, पाक खुसबोए बेहेकत ।।८।।

देख्या हौज अर्स का, द्योहरियां गिरदवाए ।
और जंगल पूर मोतियों से, दिया महंमद को देखाए ।।९।।

इहां लग साथ जबराईल, पोहोंच्या इन मकान ।
कहे आगे मेरे पर जलें, चढ़ सक्या न चौथे आसमान ॥१०॥

महंमद की बुजरकी, बीच इन कलाम ।
और कही हकीकत, आखिर आवने ईसा इमाम ॥११॥

१. सखियां । २. ताला (फरामोसी) । ३. जमुना जी ।

पाया बीच नासूत के, हजरत ईसे दीदार ।
दई कुंजी बका की, देखे लैलत कदर तीन तकरार ॥१२॥
हक बैठे आए अंदर, पट अर्स दिए सब खोल ।
जो कही मारफत महंमदें, सो रूहअल्ला कहे सब बोल ॥१३॥
जो हकमें किए नबिएं जाहेर, दूजे रखे रसूल पर अखत्यार ।
और गुझ रखे जो तीसरे, सो कहे रूहअल्ला कर प्यार ॥१४॥
अब कहूं रूहअल्लाह की, जिन दई महंमद साहेदी ।
मेरा दिल उनसे रोसन हुआ, पाई न्यामत बका दोऊ की ॥१५॥
जित जबराईल ना चल सक्या, आगे परे न पाए ।
सो ए ठौर देखे सबे, बरकत रूहअल्लाह ॥१६॥
हौज जोए आई नजरों, और नूरजलाली हद ।
इलम ईसे के देखाया, और मुसाफ हदीस महंमद ॥१७॥
और जो मजकूर हुई अंदर, कौल कहे इसारत ।
ए साहेदी हादी मोमिन बिना, तो ए किनकी को खोलत ॥१८॥
देखी सूरत अमरद[१], तासों किया मजकूर ।
सो ए दुनी में महंमदें, सब मेयराजें किया जहूर ॥१९॥
दुनियां चौदे तबक में, जाकी तरफ न पाई किन ।
सो सब मेयराज में, रसूलें करी रोसन ॥२०॥
पर ए बानी सो समझे, जो पोहोंच्या होए इन मजल ।
और क्यों समझें ए माएने, जो इन राह में जात हैं जल ॥२१॥
इत पोहोंच्या ईसा रूहअल्ला, सो भी महंमद की सूरत ।
ताको हकें कही रूह अपनी, जाको खावंद खिताब आखिरत ॥२२॥
महंमद कहे ईसा आवसी, और महंमद मेंहेंदी इमाम ।
मार दज्जाल कुफर दुनी का, एक दीन करसी तमाम ॥२३॥

१. किशोर स्वरूप ।

एक दीन तब होवहीं, जब साफ होवें सब दिल ।
ए हक बिना न होवहीं, जो चौदे तबक आवें मिल ॥२४॥

सो ए खिताब रूहअल्ला का, या महंमद सिर खिताब ।
या तो सिर इमाम के, जो आखिर खोलसी किताब ॥२५॥

सोई खोले ए माएने, जिन लई मजल इन ठौर ।
ए बानी वाहेदत की, दूजा केहेते जल मरे और ॥२६॥

ए जो औलाद आदम की, दिल मजाजी ऐसा दुस्मन ।
पूजत सब हवा को, सो क्यों सुनी जाए फुरकान इन ॥२७॥

हक महंमद मोमिन मुसाफ, ए पेहेचान होसी जब ।
झूठ सांच दोऊ मिल रहे, पाउ पलमें जुदे होसी तब ॥२८॥

ए सब पैदा महंमद के नूर से, अव्वल आखिर सोई नूर ।
एक साइत न खाली नूर बिना, तब दुनी देखे जब होसी जहूर ॥२९॥

सिर खिताब जमाने खावंद, सो करसी मुसाफ जहूर ।
झूठ दूर होए रात अंधेरी, सब देखें हक अर्स ऊगे सूर ॥३०॥

सब की जुबां से महंमद, सब पर करसी हिदायत ।
ए सुकन लिखे सब किताबों, पर क्यों समझे दम गफलत ॥३१॥

अव्वल आखिर बीच महंमद, इत सब जाने दुनी कलाम ।
हकें मासूक कह्या महंमद को, सो क्यों समझे दुनी आम ॥३२॥

जेता कोई रूह मोमिन, जाए पोहोंच्या हक इलम ।
सो बात समझे हक अर्स की, जिन दिल पर लिख्या बिना कलम ॥३३॥

और जाहेर दिल जो मजाजी, सो भी कहे गोस्त टुकड़े ।
सो क्यों सुनसी केहेसी क्या, जो कहे अंधे बेहेरे मुरदे ॥३४॥

दिल मोमिन अर्स कह्या, उतरे भी अर्स से ।
हक बैठक इनों दिल पर, ए सिफत न आवे जुबां में ॥३५॥

कह्या दुनी निकाह[1] अबलीस से, दिल मजाजी तिन पैदास ।
जेती औलाद आदम की, पूजे हवा चले लिबास ॥३६॥

कह्या महंमद हक के नूर से, नूर महंमद के मोमिन ।
हक हादी रूहें वाहेदत, इत मिले न दूजा सुकन ॥३७॥

कहे तिहत्तर फिरके महंमद के, एक नाजी नारी बहत्तर ।
नाजी को हिदायत हक की, खड़ा बीच राह के पर ॥३८॥

और तफरका[2] भए, चले कौल तोड़ कर ।
दाएं बाएं चलाए दुस्मनें, मारे गए हक बिगर ॥३९॥

मेयराज हुआ महंमद पर, कोई और न आया ढिग इन ।
सो आखिर ईसा इमामें, किए मेयराज में सब मोमिन ॥४०॥

खूबियां आखिर बखत की, किन मुख कही न जाए ।
खूबी कहिए तिन की, जो सब्द मांहें समाए ॥४१॥

अव्वल जमाने के सैयद, और बड़े केहेलाए पैगंमर ।
पर सो बराबरी कर ना सके, जो आई उमत महंमद की आखिर ॥४२॥

लिख्या सब कुरान में, माएने मगज सब्द ।
क्या समझें अव्वल कतार जो, दुनी बांधी जाए मांहें हद ॥४३॥

रूहअल्ला मुरदे उठावत, हक का हुकम ले ।
आखिर अपने हुकम उठावहीं, मोमिन महंमद के ॥४४॥

इन बिध लिख्या जाहेर, तो भी देखे न खुलासा ।
सब बोले फना में रात को, किया उमतें फजर बका ॥४५॥

जो लिखी सबे बुजरकियां, सो सब बीच आखिर ।
सो गिरो नाजी महंमद की, लिखे नामे याके फैलों पर ॥४६॥

अव्वल आखिर कयामत लग, कह्या नूर चढ़ता नबी का ।
खाली न जमाना महंमद बिना, ए बीच मुसाफ हदीस लिख्या ॥४७॥

१. विवाह । २. पृथक ।

ए जाहेर करे सोई बुजरकी, कह्या जिनका दिल अर्स ।
आखिर सोई नजीकी मोमिन, जो अर्स मता के वारस ॥४८॥

मोमिन उतरे नूर बिलंद से, कौल किया हक सों जिन ।
कह्या रसूल तुम पर आवसी, सो करसी तुमें चेतन ॥४९॥

और भेजोंगा फुरमान, सब इत की हकीकत ।
और इसारतें रमूजें, मासूक देसी तुमें मारफत ॥५०॥

दुनियां पैदा कलमें कुंन से, असल उनों जुलमत ।
जिन मिल जाओ तिन में, तुम हादी मुझ से निसबत ॥५१॥

तुम आप में रहियो साहेद, और गवाही फरिस्ते ।
मैं भी साहेद तुम में, तुम जिन भूलो सुकन ए ॥५२॥

याद कीजो मेरे अर्स को, और निसबत हक हादी ।
इलम देऊं मैं अपना, जासों सक रहे न जरे की ॥५३॥

खेल किया तुम वास्ते, ज्यों बाजी के कबूतर ।
जिन मिल जाओ तिन में, ओ तुम नहीं बराबर ॥५४॥

हांसी इसही बात की, मेरा इलम तुमको जगाए ।
तुम बका करोगे दम खेल के, पर सकोगे न आप उठाए ॥५५॥

ऐसा फरेब देखावसी, तुम हूजो खबरदार ।
तुम जिन भूलो आप अर्स मुझे, मैं तुमारा परवरदिगार ॥५६॥

हम कबूं न भूलें तुमको, बैठेंगे पकड़ कदम ।
हम तुमारे ऐसे आसिक, तुमें छोड़े नहीं एक दम ॥५७॥

तुम साहेब हमारे ऐसे मासूक, हम ऐसे तुमारे आसिक ।
तुमको क्यों हम भूलेंगे, और देओगे इलम बेसक ॥५८॥

ए तो बड़ी हाँसी कोई खेल में, जो ऐसी होए हमसे ।
मोमिन रहियो साहेद, ए हक कौल करत हममें ॥५९॥

लिख्या इन बिध जाहेर, तो भी पावें न खेल कबूतर ।
अकल न पोहोंचे इनों की, सो भी लिख्या लिखन हारे यों कर ॥६०॥

सब्द लिखे जो बुजरकों, सो सब आखिरी उमत का ।
रात सब्द सब फना के, सब्द आखिरी दिन बका ॥६१॥

सो ए बड़ाई सब उमत की, जो कही महंमद की आखिर ।
वह खावंद कहे खेल के, ए खेल के कबूतर ॥६२॥

एता फरक कह्या जाहेर, तो भी करें इन की सरभर[१] ।
वह फरक मुरदे ज्यों जीवते, पर क्या करें अकल बिगर ॥६३॥

फुरमान ल्याया हक का, महंमद आया किन ऊपर ।
एती खबर किने ना करी, जोलों हुई आखिर ॥६४॥

बीती सदी अग्यारहीं, ल्याए रसूल फुरमान ।
बड़े उलमा[२] आरिफ[३] कहावहीं, पर पड़ी न काहू पेहेचान ॥६५॥

पढ़सी को फुरमान को, लेसी को हकीकत ।
कलाम अल्ला को खोलसी, को लेसी हक मारफत ॥६६॥

जोलों फुरमान खुल्या नहीं, तोलों रात है सब में ।
एही फुरमान करसी फजर, जब लिया हाथ हादी ने ॥६७॥

कौल तोड़ जुदे किए कुफरें, मेटे मसी तफरका[४] ।
एक दीन तब होएसी, दिन ऊगे अर्स बका ॥६८॥

ए अव्वल कह्या महंमद ने, आए ईसा मारसी दज्जाल ।
साफ दिल होसी सबों, कराए दीदार नूरजमाल ॥६९॥

इमाम इमामत उमत की, करसी अर्स अजीम ऊपर ।
ए होसी हैयाती सिजदा, तब हुई तमाम फजर ॥७०॥

जो अर्स से रूहें उतरीं, तामें था रूहअल्ला सिरदार ।
कह्या तुम पर रसूल भेजोंगा, हकें यों कौल किया करार ॥७१॥

१. बराबरी । २. विद्वद्जन । ३. ब्रह्मज्ञानी । ४. पृथकता (अंतर) ।

इन विध लिख्या जाहेर, पर किने न किया बयान ।
ए होए तिनहीं से जाहेर, हकें जिन पर भेज्या फुरमान ॥७२॥

खिताब रसूली महंमद पर, तमामी आखिर मेंहेंदी खिताब ।
ए ले इलम आखिरी हक का, महंमद मेंहेंदी खोले किताब ॥७३॥

फुरमान हकें लिख भेजिया, दिया हाथ रसूल के ।
रूह अल्ला पर भेजिया, किन खबर न पाई ए ॥७४॥

ए आगे फुरमाया रसूलें, कौल तोड़ होसी तफरका ।
एक नाजी[1] बहत्तर नारी[2] लिखे, पर किन पाया न खुलासा ॥७५॥

कौल सोई तोड़ेंगें, जिनों होसी मजाजी दिल ।
होसी जुदे बुजरकी वास्ते, कह्या फिरसी फिरके मिल मिल ॥७६॥

जाहेर लिख्या मिस्कात में, मैं डरों पीछले इमामों से ।
गुमराह करसी दुनी को, ऐसे बुजरक होसी आखिर में ॥७७॥

होसी दिल सैतान का, और वजूद आदमी का ।
लोहू सैतान ज्यों बीच वजूद, ए बीच हदीस लिख्या ॥७८॥

तरफ चारों बीच वजूद के, लिख्या विध विध कर ।
यों दुनी निगली सैतान ने, एक हकें मोमिन बचाए फजर ॥७९॥

भाँत भाँत आलम में, रसूलें करी पुकार ।
बिन मोमिन कोई न कादर, जो सुनके होए हुसियार ॥८०॥

जिन विध लिख्या कुरान में, हदीसों में भी सोए ।
ए अर्स दिल मोमिन जानहीं, जो नूर बिलंद से उतर्‌या होए ॥८१॥

आखिर खिताब सिर रसूल, दूजा सिर मेंहेंदी इमाम ।
इन विध खावंदी रूहअल्लाह की, ए तीनों एक दीन करसी तमाम ॥८२॥

ए अव्वल कह्या रसूलें, पर क्यों पावे मजाजी दिल ।
ना बूझे हक हादी रूहों की, जो चौदे तबक मथें मिल ॥८३॥

१. ईमानदार । २. दोजखी ।

केहे केहे रसूलें फेर कही, ज्यों समझें सब कोए ।
पर ए बूझें हक हादी रूहें, और बूझे जो दूसरा होए ॥८४॥

कहे हादी हक इलम से, ज्यों एक हरफें बूझे सब बयान ।
पर नफस[१] मजाजी क्या जानहीं, जाके दिल आँख बुध न कान ॥८५॥

जो रूह होवे अर्स अजीम की, नूर बिलंद से उतरी ।
सोई समझे हक इसारतें, और खबर न काहू परी ॥८६॥

ना तो इन बिध कही जो रसूलें, ज्यों सब समझी जाए ।
जाको असल ना दिल अकल, तिन हक कौल क्यों समझाए ॥८७॥

जो हक मुख आपे कही, करता हों इसारत ।
सो हक की हादी बिना, और न कोई समझत ॥८८॥

हकें लिखे समझ इसारतें, या ल्याया समझे सोए ।
या समझें आई जिन पर, और बूझे जो दूसरा होए ॥८९॥

तो एते दिन बूझी नहीं, साल बीते नब्बे हजार पर ।
क्यों समझे औलाद आदम की, हक दिल छिपी खबर ॥९०॥

निकाह हवा सों कही आदम की, निकाह अबलीस औलाद आदम ।
पूजे हवा खाहिस[२] ले अपनी, जेता बुजरक आदम हर दम ॥९१॥

तो रही छिपी बीच फुरमान के, निकाह अबलीस सोहोबत अकल ।
सो क्यों पावें मगज मुसाफ का, कहे मुरदे मजाजी दिल ॥९२॥

जिन गेहूं खाया कौल तोड़ के, आदम तिन नसल ।
सो क्यों पावे रमूजें हक की, जो लिख्या अर्स असल ॥९३॥

ए फुरमान रूहअल्ला पर, ल्याया हक का रसूल ।
इमाम खिताब खोले किताब, परे न मारफत भूल ॥९४॥

खोली अग्यारहीं सदी मिनें, ए जो किताब फुरकान[३] ।
मार दज्जाल करे एक दीन, मिलाए कयामत निसान ॥९५॥

१. इंद्रिय । २. चाहना । ३. कुरान ।

इमाम मसी मिल रसूल, मार दज्जाल करसी फजर ।
रोज फरदा सदी बारहीं, खोली बातून उमत नजर ॥९६॥

काफर कौल कयामत के, जानते थे झूठ कर ।
सो सरत महंमद की सत हुई, अग्यारहीं सदी आखिर ॥९७॥

कोई एक कौल महंमद का, हुआ न चल विचल ।
पर क्यों बूझें औलाद आदम की, जिनकी अबलीस नसल[1] ॥९८॥

साँचे कौल महंमद के, फिरवले सब पर ।
जो कछू कह्या सो सब हुआ, पर समझे नहीं काफर ॥९९॥

दीदार हुआ मुरदे उठे, आए हक इलम ।
भिस्त दोजख कही त्यों हुई, किया हिसाब चलाए हुकम ॥१००॥

कौल केतेक आए मिले, और केतेक हैं मिलने ।
भूल परे ना किसी कौल की, रसूलें कह्या तिनमें ॥१०१॥

निसान मिले सब बातून, अब जाहेर होसी सब ।
दाभ[2]-तूल[3]-अर्ज[4] काफरों, स्याह मुंह करसी तब ॥१०२॥

जब खोले मगज मुसाफ के, द्वार हकीकत मारफत ।
एही दिन ऊगे होसी जाहेर, देखसी दुनी कयामत ॥१०३॥

महामत कहे ए मोमिनों, जिन जागी भूलो कोए ।
राह अर्स इस्क न छोड़िए, ज्यों सोभा लीजे ठौर दोए ॥१०४॥

॥प्रकरण॥२॥चौपाई॥२१७॥

प्रकरण तथा चौपाइयों का संपूर्ण संकलन
प्रकरण ५०३, चौपाई १८२२७

॥छोटा कयामतनामा सम्पूर्ण॥

१. औलाद । २. जानवर । ३. लम्बा । ४. चौड़ा ।